April 2012

March 29 Thursday

मार्क्सवाद Marxism

विषय प्रवेश Introduction

19 वी शताब्दी में राजदर्शन के क्षेत्र में जिस विचारधारा ने सर्वाधिक हलचल मचाई तथा जिसका प्रभाव 20 वी शताब्दी में भी कम नहीं हुआ है, वह विचारधारा है - मार्क्सवाद अथवा वैज्ञानिक समाजवाद। इस विचारधारा ने इतने महान आंदोलन को जन्म दिया है जितना ईसाई धर्म के आविर्भाव के बाद अब तक नहीं हुआ था। कार्ल मार्क्स इस विचारधारा का प्रणेता था। उसके द्वारा प्रतिपादित समाजवाद एक महान वैज्ञानिक दर्शन, क्रांतिकारी कार्यक्रम, प्रगतिशील आंदोलन, सौ करोड़ से अधिक लोगों की सामाजिक व्यवस्था का राजनीतिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक आधार है। सैकड़ों चुनौतियों के बावजूद यह करोड़ों लोगों का धर्म बना हुआ है। इसकी लोकप्रियता के कारण ही कार्ल पॉपर जैसे मार्क्सवाद के आलोचक भी यह स्वीकार करने के लिए बाध्य है कि "शब्दों के स्थान पर कार्यों पर बल देने वाली विचारधारा होने के कारण मार्क्सवाद निश्चय ही हमारे समय की सबसे अधिक महत्वपूर्ण सुधारवादी विचारधारा है।"

मार्क्स के पहले साइमन, फोरियर, ओवन तथा ब्लैंक आदि ने समाजवादी विचारधारा का प्रतिपादन किया था, किन्तु उनका समाजवाद वैज्ञानिक नहीं था क्योंकि वह इतिहास पर आधारित न होकर केवल कल्पना पर आधारित था। मार्क्स पहला व्यक्ति था जिसने पूंजीवादी व्यवस्था के दोषों, उन्हें दूर करने के उपायों तथा भावी समाज की स्थापना के संबंध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया तथा साम्यवादी समाज की स्थापना की आशा एवं उसके व्यावहारिक साधनों का भी उल्लेख किया। उसने ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर समाजवाद का प्रतिपादन किया। इसीलिए

Scanned with CamScanner

उसके समाजवाद को 'सर्वहारा समाजवाद' या 'वैज्ञानिक समाजवाद' के नाम से जाना जाता है। सी० ई० एम० जोड के शब्दों में, "मार्क्स प्रथम समाजवादी विचारक है जिसके कार्यों को वैज्ञानिक कहा जा सकता है।" वेपर के कथानुसार, "मार्क्स के पूर्व के विचारकों ने केवल सुंदर गुलाब के नजारे लिए थे, गुलाब के पौधों के लिए जमीन तैयार नहीं की थी। मार्क्स ने इस जमीन को गहरा खोदकर तैयार किया था।"

मार्क्सवाद का विकास Development of Marxism

मार्क्सवादी दर्शन का जन्म उदारवादी विचारधारा की असफलताओं के प्रतिक्रियास्वरूप हुआ। लेकिन मार्क्स ने जिस भवन का निर्माण किया उसकी नींव पहले ही रखी जा चुकी थी। आदिम समाज की आर्थिक व्यवस्था एक प्रकार से साम्यवादी ही थी। आदिम समुदाय में भूमि पर बहुधा पूरे समुदाय का अधिकार होता था। प्राचीन यूनान में प्लेटो ने तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक बुराइयों से बचने के लिए दार्शनिक राजाओं द्वारा शासित आदर्श राज्य की कल्पना की थी। 16 वी शताब्दी में इंग्लैण्ड में टॉमस मूर ने अपनी पुस्तक 'कल्पना लोक' (Utopia) में एक आदर्शवादी चित्र खींचा था। मूर के आदर्श राज्य में सभी का स्वामीत्व था और प्रत्येक व्यक्ति सुखी था। पूँजीवादी व्यवस्था के कारण समाज में जो विषम स्थिति हुई उसमे श्रमिकों में काफी असंतोष पैदा हुआ कारण यह कि उनके पास पूँजीवादी शोषण से अपनी रक्षा करने का कोई उपाय उपलब्ध नहीं था उनके इस असंतोष ने समाज सुधारकों तथा चिन्तकों का ध्यान आकर्षित किया। वे उनके शोषण को रोकने तथा उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए

April 2012
S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
29 30

March 31
Day-091-275
Saturday

विभिन्न प्रकार के सिद्धांतों का प्रतिपादन करने लगे। समाजवाद की उत्पत्ति उनके इसी प्रयास का परिणाम था। प्रारंभ में समाजवाद का स्वरूप कल्पना-प्रधान था। उसके प्रतिपादक थे ब्रिटिश समाज सुधारक रॉबर्ट ओवेन, फ्रांसीसी चिंतक सेंट साइमन, प्रूधों, चार्ल्स फोरियर, सिसमोंडी आदि। मार्क्स ने इन सब विचारकों को 'काल्पनिक समाजवादी' (Utopian Socialist) कह कर पुकारा, क्योंकि वे लोग पूँजीवादी व्यवस्था पर नहीं बल्कि पूँजीवादी व्यवस्था की बुराइयों पर प्रहार कर रहे थे। साथ ही, वे यह भी नहीं बता सके थे कि उनके द्वारा प्रतिपादित समाजवादी व्यवस्था किस प्रकार साकार रूप धारण कर सकेगी।

ऐसे स्वप्नलोकीय समाजवाद को वास्तविकता के धरातल पर उतारने का कार्य मार्क्स ने किया। उसने एक वैज्ञानिक की तरह ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण किया और सामाजिक प्रगति के लिए उत्तरदायी तत्वों को खोज निकाला। इस तरह उसके हाथों समाजवाद काल्पनिक आदर्श से व्यवहारिक आदर्श बन गया। हारमोन ने लिखा है कि, "वैज्ञानिक समाजवाद के दर्शन का निर्माण कार्ल मार्क्स नामक एक विद्वान तथा अध्यवसायी जर्मन यहूदी द्वारा किया गया था।"

कार्ल मार्क्स का जीवन परिचय Life History of Karl Marx

क्रांतिकारी तथा वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 ई को एक यहूदी परिवार में पश्चिमी प्रशिया के ट्रीविज में हुआ था। मार्क्स बचपन से ही प्रतिभाशाली था। 22 वर्ष की अल्पायु में उसने 'डॉक्टर ऑफ फिलासफी' की उपाधि प्राप्त की। सन् 1841 में जेना विश्वविद्यालय ने उसे डॉक्टर की उपाधि दी। यहाँ उसने प्राध्यापक बनने का प्रयास किया किन्तु

Sunday -01

Scanned with CamScanner

असफल रहा। अतः उसने पत्राकार का व्यवसाय अपनाया। मैक्सी के मतानुसार, मार्क्स के लिए यह अच्छा हुआ, क्योंकि यह संभव है कि 'श्रमजीवी समाजवाद' के जनक के रूप में उसे वह ऐतिहासिक अमरता कभी नहीं प्राप्त होती। सन् 1843 में मार्क्स ने जैनी नामक लड़की से विवाह कर लिया। अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण मार्क्स को सन् 1843 के अंत में जर्मनी छोड़कर पेरिस जाना पड़ा। सन् 1844 में पेरिस में उसकी मुलाकात फ्रेडरिक एंगेल्स से हुई। इन्होंने संयुक्त रूप से समाजवादी सिद्धांत प्रतिपादित किया। मार्क्स का पूरा जीवन रोमांचकारी घटनाओं, कष्टों एवं संघर्षों की कहानी है। जीवन भर समाजवादी आंदोलन और लेखन में व्यस्त यह महापुरुष सन् 1883 ई० में देवलोक सिधार गया। उसके संबंध में गैटेल ने लिखा है, "दरिद्रता एवं संघर्ष कदाचित मार्क्स के अनुकूल सिद्ध हुए क्योंकि अंत में उसकी इतिहास की शक्तियों को मुक्त करने की महत्वकांक्षा पूर्ण हो गयी।"

वैज्ञानिक समाजवाद Scientific Socialism

कार्ल मार्क्स के द्वारा वैज्ञानिक समाजवाद का प्रतिपादन किया गया है। वैज्ञानिक समाजवाद के द्वारा सामाजिक आर्थिक असमानता, शोषण, अत्याचार, उत्पीड़न जैसे अमानवीय असामाजिक षड़यंत्र के मूल कारणों का विश्लेषण किया जाता है तथा इन विषमताओं के निदान हेतु वैज्ञानिक सिद्धांत प्रस्तुत किया जाता है।

वैज्ञानिक समाजवाद का उद्देश्य मनुष्य के शोषण को खत्म कर जुल्म और वर्ग को मिटाकर शोषणरहित, जुल्मरहित, बराबरी और न्याय पर आधारित वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज की स्थापना करना है। वैज्ञानिक समाजवाद व्यक्ति-व्यक्ति

Scanned with CamScanner

के बीच एक दीवार के रूप में खड़ी 'प्राइवेट प्रोपर्टी' को खत्म कर देना चाहता है, क्योंकि उसके अनुसार तमाम समस्याओं की जड़ प्राइवेट प्रोपर्टी ही है। वैज्ञानिक समाजवाद स्वयं में एक विज्ञान है, वह इसीलिए कि सामाजिक परिवर्तन एवं बेहतर समाज के लिए वह वैज्ञानिक उपाय सुझाता है।

वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांतों में निम्न हैं:-

1. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism)
2. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या (Materialistic Interpretation of History
3. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत (Theory of Surplus Value)
4. वर्ग - संघर्ष का सिद्धांत (Theory of Class Struggle)
5. राज्य का सिद्धांत (Theory of State)
6. क्रांति एवं परिवर्तन का सिद्धांत (Theory of Revolution & Change)

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism)

कार्ल मार्क्स के सम्पूर्ण दर्शन का भवन उनके द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की नींव पर खड़ा है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद दो शब्दों से मिलकर बना है - पहला 'द्वन्द्वात्मक' शब्द उस प्रक्रिया को स्पष्ट करता है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विकास हो रहा है और दूसरा 'भौतिकवाद' इसके विकास के मूल तत्व को प्रदर्शित करता है।

द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया (Dialectical Process) - मार्क्स ने जिस द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को उस दर्शन में प्रयुक्त किया है, उसका मूल प्लेटो एवं हीगल के दर्शन में निहित है। द्वन्द्व शब्द 'डायलेगो' से रूपांतरित है जिसका अर्थ होता है संवाद। यह पद्धति सत्य पर पहुँचने के लिए वाद-विवाद की पद्धति थी। प्लेटो के ग्रंथ दि रिपब्लिक में इस पद्धति का प्रयोग हुआ है। हीगल ने द्वन्द्वात्मक पद्धति का गहन अध्ययन किया था

और कालान्तर में उसको ही अपने दर्शन का मूल आधार बना लिया था। मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को समझने के लिए हीगल द्वारा प्रतिपादित प्रक्रिया को समझना आवश्यक है।

हीगल एक महान आदर्शवादी दार्शनिक था। उसने कहा कि सम्पूर्ण संसार गतिशील है और इसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। इस गतिशीलता का आधार विचार (Idea) अथवा विश्वात्मा (Worldspirit) है। उसके अनुसार इतिहास घटनाओं की क्रमिक प्रक्रिया है। यह विकास द्वन्द्वात्मक रूप में होता है जो विषमता व संघर्ष पर आधारित है। हीगल विकास की तीन अवस्थाओं का वर्णन करता है :- 1. वाद (Thesis),
2. प्रतिवाद (Antithesis)
3. संवाद (Synthesis)

हीगल कहते हैं कि कोई विचार वाद से प्रारंभ होता है। स्वाभाविक रूप से विचार का विरोध उत्पन्न होता है जो प्रतिवाद कहलाता है। अब वाद तथा प्रतिवाद का द्वन्द्व होता है जो संवाद कहलाता है। हीगल कहते हैं कि यही संवाद आगे चलकर पुनः वाद का रूप ले लेता है जिसका फिर प्रतिवाद होता है और द्वन्द्व के माध्यम से संवाद के रूप में फिर नया विचार उत्पन्न होता है। यह क्रम सदा चलता रहता है और अंत में सत्य की प्राप्ति होती है।

मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववाद को स्वीकार किया है, किन्तु हीगल के इस विचार को अस्वीकार कर दिया है कि संसार का नियामक तत्व विश्व आत्मा (WorldSpirit) या विचार (Idea) है। उसने इस विश्व-आत्मा या विचार के स्थान पर भौतिक तत्व को स्वीकार किया है क्योंकि वह एक भौतिकवादी था। उसने कहा कि द्वन्द्ववाद का आधार विश्व-आत्मा या विचार न होकर गतिशील

Scanned with CamScanner

May 2012
S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31

April 05
Day-096-270
Thursday

पदार्थ है। मार्क्स का विचार है कि भौतिक पदार्थ ही संसार के विकास की प्रक्रिया में रहते हैं अर्थात् वाद, प्रतिवाद तथा संवाद के रूप में पदार्थ निरंतर विकास करता है। यही कारण है कि मार्क्स का द्वन्द्ववाद हीगल से बहुत दूर चला गया है। मार्क्स स्वयं कहते हैं कि "मेरा द्वन्द्ववाद न केवल हीगल के द्वन्द्ववाद से भिन्न है, बल्कि वह उसके ठीक विपरीत है। मैंने हीगल के द्वन्द्ववाद को सिर के बल खड़ा पाया, मैंने उसे पैरों के बल सीधा खड़ा कर दिया है।"

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विशेषताएँ Characteristics of Dialectical Materialism

1. मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :-

1. आंगिक एकता - विश्व एक भौतिक जगत है, जिसमें वस्तुएँ एवं घटनाएँ एक-दूसरे से पूर्णतः सम्बद्ध हैं। अर्थात् प्रकृति की सभी वस्तुओं में आंगिक एकता पायी जाती है।
2. गतिशीलता - प्रकृति में पाया जाने वाला प्रत्येक पदार्थ जड़ या स्थिर न होकर परिवर्तनशील होता है।
3. परिवर्तनशीलता - आर्थिक शक्तियाँ सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियाँ हैं। चूँकि भौतिक जगत निरंतर परिवर्तनशील है, अतः सामाजिक जीवन उसी के अनुरूप परिवर्तनशील है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया द्वन्द्ववाद के माध्यम से चलती है।
4. परिमाणात्मक - गुणात्मक परिवर्तन परिवर्तन केवल रूप संबंधी तथा मात्रात्मक ही नहीं होते वरन् गुणात्मक भी होते हैं। गेहूँ के एक दाने का कई दिनों दानों में परिवर्तन मात्रात्मक परिवर्तन है परंतु एक निश्चित सीमा से अधिक तापक्रम बढ़ जाने या घट जाने से पानी का भाप या बर्फ बन जाना गुणात्मक परिवर्तन है। मात्रा से गुण की ओर परिवर्तन अचानक होता है।
5. परिवर्तन निम्न से उच्च की ओर - हर परिवर्तन निम्न

Scanned with CamScanner

स्तर से उच्च स्तर में होता है तथा साधारण से जटिल होता है।

6. अन्तर्विरोध का संघर्ष विकास का कारण - प्रकृति की हर चीज में अन्तर्विरोध तथा नकारात्मक और सकारात्मक पहलू होते हैं जिनका आपसी संघर्ष विकास की प्रक्रिया है।

7. निषेध का निषेध - यह द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धांत का एक नियम है जिसके अनुसार जो चीज दूसरों को नष्ट करके अस्तित्व में आती है उसका नाश भी अवश्यम्भावी है।

8. क्रांतिकारी प्रक्रिया - गुणात्मक परिवर्तन के आने को क्रांतिकारी प्रक्रिया माना जाता है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के आधार पर मार्क्स ने अपने समाजवादी विचारों की व्याख्या की। मार्क्स का कहना था कि प्रत्येक युग में दो या अधिक आर्थिक शक्तियों में विरोध रहा है और विकास के कारण विकास होता रहा है वर्तमान समय में पूंजीवाद और सर्वहारा वर्ग के संघर्ष के परिणामस्वरूप पूंजीवाद का अंत होगा और साम्यवाद की स्थापना होगी। यह वह स्थिति है जब सभी वर्ग समाप्त हो जाएँगे और वर्ग - संघर्ष का अन्त वर्ग विहीन समाज में होगा। मार्क्स ने अपने इस सिद्धांत के आधार पर क्रांति का औचित्य सिद्ध कर दिया है। उसने इसे अपनाकर वर्ग - संघर्ष को अनिवार्य बना दिया है। इस संघर्ष का अंत वर्गविहीन समाज की स्थापना में होगा। इस प्रकार मार्क्स का द्वन्द्ववाद जिस लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है वह एक ऐसे समाज की स्थापना है जिसमें न कोई वर्गभेद होगा और न कोई शोषण। यह अंतिम सवाद है जिससे कोई प्रतिवाद जन्म नहीं लेगा। वर्गविहीन समाज की स्थापना के बाद वर्ग - संघर्ष की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया रुक जाती है।

Scanned with CamScanner

May 2012

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

April 07
Day-098-268
Saturday

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना Criticism of Dialectical Materialism

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद - मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की अनेक आधारों पर आलोचना की जाती है। ये निम्न है :-

1. अस्पष्ट - वेपर के अनुसार, "द्वन्द्ववाद की धारणा अत्यंत जटिल एवं अस्पष्ट है। इसे मार्क्स ने कहीं भी स्पष्ट नहीं किया है। उसने यह बताने का प्रयास नहीं किया है कि पदार्थ किस प्रकार गतिशील होते है।"

2. पदार्थ चेतनायुक्त नहीं होता - मार्क्स का यह विचार गलत है कि पदार्थ चेतनायुक्त होता है क्योंकि उसमें परिवर्तन बाह्य परिस्थितियों के कारण होता है। कैरयूहण्ट (Carew Hunt) ने लिखा है, "हम यह तो देख सकते है कि विचार क्यों विकसित होते है, किन्तु किसी ऐसे कारण की कल्पना नहीं कर सकते कि भौतिक पदार्थों का विकास उसी तरह क्यों होगा।"

3. भौतिकवाद पर अधिक बल - मार्क्स केवल भौतिक तत्वों पर ही जोर देते है लेकिन संसार के विकास में आध्यात्मिक तत्वों का भी महत्वपूर्ण हाथ है। सोरोकिन ने कहा है कि, "संसार का विकास ज्ञानात्मक, आदर्शवादी तथा विलासितावादी युगों के वृत्त में घुमा करता है।"

4. द्वन्द्ववाद स्वयं विरोधी :- द्वन्द्ववाद स्वयं विरोधी है। यह आलोचना कार्ल पॉपर की है। उसने भौतिकवाद की आलोचना नहीं की, केवल द्वन्द्ववाद की आलोचना की है।

5. द्वन्द्ववाद इतिहास की व्याख्या नहीं करता - मार्क्स का यह तर्क है कि केवल द्वन्द्ववाद ही इतिहास की गुत्थी को खोलता है, सत्य नही है। कोई भी द्वन्द्वात्मक ढंग से इतिहास की व्याख्या नहीं कर सकता। जैसा कि कार्ल कैडर्न ने कहा है, "इतिहास कभी समाप्त न होने वाली धारा से निकलता है, जिसका आदि या अंत कोई भी नहीं जानता।" इतिहास का विस्तार त्रिस्तरीय होने के कारण वाद, प्रतिवाद तथा संवाद के अनुसार

Sunday -08

Scanned with CamScanner

09 April
Day-100-266
Monday

April 2012
S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
29 30

उसके चरणों का निर्धारण करना कठिन कार्य है। इतिहास केवल प्रगति की कहानी नहीं - इतिहास केवल प्रगति का अभिलेख नहीं है, वह पतन और प्रतिगमन की भी कहानी है। अतः निरंतर और निर्बाध प्रगति की सिद्धांत के रूप में द्वन्द्ववाद की वास्तविक इतिहास के साथ संगति नहीं बैठती।

निष्कर्ष - कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अबतक के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में सृष्टि के पीछे पदार्थ एक महत्वपूर्ण तत्व है। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है कि मूर्त चीज ही सत्य होती है, अमूर्त नहीं। कार्ल मार्क्स जिस वैज्ञानिक सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं, उसकी वैज्ञानिकता यथार्थवादिता के कारण है, ईश्वर संबंधी एकोसला के कारण नहीं। कार्ल मार्क्स के भौतिकवादी सिद्धांत की जो आलोचना की गई है, उसमे कोई दम नहीं है। कार्ल मार्क्स के इस सिद्धांत की आलोचना वही करते हैं जो यथास्थितिवादी और बुर्जुआ है। वैज्ञानिक सोच रखने वाले कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कार्ल मार्क्स कहते हैं वही सत्य है, सही है, सब कुछ है।

Scanned with CamScanner